International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 23-04-2020; Accepted: 25-04-2020; Published: 06-05-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 03-04

मिथकीय आलोचना के विविध आयाम

डॉ. मधुलता व्यास
सहयोगी प्राध्यापक, रेवाबेन पटेल कॉलेज, भंडारा, महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना

मिथक शब्द की आलोचना से पूर्व हमें आलोचना को समझना आवश्यक है। आलोचना, समालोचना, अंग्रेजी के ''क्रिटिसिज्य, 'रिव्यूं ओपिनियन'' आदि शब्दों के सिवा संस्कृत की टीका व्याख्या आदि अर्थो में इसका व्यवहार होते देखा गया है। साधारणतः समालोचक का कर्तव्य यह समझा जाता रहा है कि वह कवि और काव्य के दोष एवं गुणों की परीक्षा करे, उत्कर्ष अपकर्ष का निर्णय बताये और उपदेयता या अनुपदेयता के सम्बन्ध में परामर्श दे, पर आलोचक सनातन काल से निम्न लिखित बातों में से एक दो, या तीन कार्य करते आये हैं, विश्लेषण व्याख्या और उत्कर्षापकर्ष विधान।[1]

कुछ नये पंडितों का मत है कि समालोचना में उत्कर्ष या अपकर्ष का निर्णय नहीं होना चाहिए। वनस्पति शास्त्री बबूल और गुलाब के सौंदर्य या गुणों की मात्रा पर विचार नहीं करता वह केवल उनकी जाति का भेद बताता है। इसी प्रकार आलोचक को भी आलोच्य ग्रंथकार की जाति का निर्णय करना चाहिए। गुण और दोष की मात्रा का नहीं।[2]

मिथक की व्याख्या एवं परिभाषा अनेक देश–विदेश के विद्वानों ने अपने–अपने तरीके से की है, कोई साहित्य, कोई धर्म संस्कृति, लोककथा विज्ञान से जोड़ता है, तो कई विद्वान इसे ऐतिहासिकता, दैविक भावना आदि से संबंधित मानते हैं, इस प्रकार कहा जा सकता है कि मिथक को एक परिभाषा में बांधना जटिल कार्य है। मिथकीय आलोचना और व्याख्या का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया है।

मिथक की व्याख्या विद्वानों के अनुसार

''एनसाईक्लोपीडिया ऑफ सोशल साईंसिज'' में मिथक को लोकसाहित्य के समान जातिगत इच्छा और विचारों का स्पष्ट माध्यम माना गया है। लोकसाहित्य और मिथक का मूलभूत अंतर यह है कि मिथक अलौकिक संसार की कथा है। दोनों में औपन्यासिक कथा उपस्थित रहती है। इस धारणा से दो तत्त्व स्पष्ट होते हैं। इसमें कथा तत्त्व की उपस्थिति उसका धार्मिक परिवेश और उसकी अलौकिक संसार से सम्बद्धता हैं।

नीश्ते के अनुसार, मिथक उठती हुई सार्वभौम भावना और सत्य का विलक्षण रूप है। श्री. हैरल्ड के शिलिंग के अनुसार मिथक एक साहित्यिक माध्यम है। जो संस्कृति के मूल और गूढ गहन आस्था और विष्वास की अभिव्यक्ति के लिये विशेष रुप से उपलब्ध है। प्रसिद्ध मनौवैज्ञानिक ''युंग'' ने मिथक को समाज को संगठित करनेवाला तत्त्व माना है और इसके लिये उन्होंने सामुहिक अचेतन का सिद्धान्त प्रस्तुत किया है। यह सामुहिक अचेतन निजी उपलब्धि नहीं है, वरन् मानस में आदिम युग से वर्तमान युग तक सम्पूर्ण मानव में जाति के संस्कार समाविष्ट रहते हैं ये संस्कार बिम्ब के रुप में होते हैं और इसकी अभिव्यक्ति मिथक के रुप में होती है।

मिथक के संदर्भ में विद्वानों का दृष्टिकोण

1. मिथक और भाषा एक दूसरे के पूरक है
2. भावना और आस्था का अनिवार्य रूप
3. मिथक एक धार्मिक कथा है
4. मिथक साहित्य का माध्यम है
5. मिथक सामाजिक संगठन का माध्यम
6. दैवीय भावना से मानवीय भावना की अभिव्यक्ति
7. जातीय सांस्कृतिक चेतना
8. ऐतिहासिक सत्य को प्रकट करने का माध्यम
9. कला और यर्थात का समन्वय
10. भाषा का मूल रूप
11. मिथक और दर्शन शास्त्र का संबंध है
12. मिथक एक अविष्कार है
13. आत्मनिष्ठा और मनोविज्ञान
14. वास्तविकता की अभिव्यक्ति
15. मन की दमित इच्छा
16. व्यक्ति और समाज के बीच तारतम्य

मिथक और भाषा एक दूसरे के पूरक है : धर्म और मिथक के बीच अंतर करना कठिन है डॉ. रमेश कुंतल मेघ–मिथक से आधुनिकता तक आलोचना मिथक तत्त्व वस्तुतः भाषा का पूरक है। भाषा को समृद्ध करने और भाषा द्वारा समृद्ध होने में वे एक दूसरे के पूरक है। मिथः पूरक एवं मिथक आदि, मानव के चिन्त में संचित अनेक अनुभूतियाँ मिथक के रूप में प्रकट होने के लिये व्याकुल रहती हैं। परंतु भाषा के माध्यम से जब वह प्रकट होती हैं तो ऊपर से एकांगी, तर्कहीन और मिथ्या जान पड़ती है। परन्तु गहराई से देखने में वह मनुष्य के अर्न्तगत को अभिव्यक्त करने का एक मात्र साधन है, काव्य चित्र, कथा आदि के रूप में मनुष्य जो कुछ रचनात्मक प्रयास करता हैं। मिथक उसे प्रेरित और समृद्ध करते रहते है। भाषा के बिना मनुष्य अपने अस्तित्व को व्यक्त नहीं कर सकता।

किसी भी संरचना के विभिन्न पद नामों एव धारणाओं के सम्बन्धों के बीच नियम सूत्र गुंथने पर भाषा का विधान होता है। जो मात्र शब्दार्थ ही नहीं है। संबंधता है, संप्रेषण है और ज्ञानानुभव है इस प्रकर्म में भाषा के वाचिक तथा भाषा वैज्ञानिक के रुप में ही, मिथक भी एक भाषा हैं यही नहीं नातेदारी भी, आर्थिकता भी, अधिरचना (कला, धर्म, विज्ञान आदि) भी विशिष्ट प्रकार की भाषाएँ हैं।[3]

मिथक और साहित्य तत्त्व एक है : मिथक और साहित्य तत्त्व एक है साहित्य कला की सजृन प्रक्रिया, मिथक की सृजन प्रक्रिया से अलग, रिचयर्ड चेज ने कहा है कि मिथक ही साहित्य है। रिचर्ड चेज की इन बातों से सहमत न भी हुआ जाय तब भी मिथककार की तरह कलाकार भी अपने अचेतन में संचित संस्कारों की अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

मिथक साहित्य के निकट है: साहित्य के क्षेत्र मिथकों के अवतरण का एक रुप धार्मिक आस्था से उनका प्रयोग भी है। हिन्दी के मध्ययुगीन काव्य में रामकृष्ण, शिव आदि की कथा इसी प्रकार के उदाहरण है। मिथक जीवन के लिये अपरिहार्य है आदि ''एस रिचडर्स'' ने कहा है मिथक के बिना मुनष्य आत्मा रहित क्रूर पशु की तरह हो जायेगा यदि मनुष्य द्वारा अर्जित इन मिथकीय परम्पराओं को एकाएक समाप्त कर दिया जाय तब भी मानव नये–नये मिथक गढ़ लेगा।

मिथक एक आविष्कार है : आविष्कार का तात्पर्य किसी प्रस्तुत वास्तविकता में से प्रमुख विचारों की अवधारणा और कल्पना के माध्यम से पुनः अभिव्यक्त करना इस विधि से यर्थातवाद तक पहुंचते है। मिथक किसी एक राष्ट्र या मानवता संस्कृति के लेखे जोखे हैं। मिथक किसी समाज की संस्कृति के आधार पर गठन या संरचना को प्रकट करते हैं। जिसके ऊपर उसके उपरुपों के कला धर्म, विज्ञान, कानून नैतिकता के विमुख एश्वर्य वाले स्वर्ण युगीन महाप्रसाद खड़े किये गये है।

''मिथक अनुभति और कल्पना पर आधारित होता है। इसलिए मिथक सार्वभौम कल्पना है।'' कल्पनाशीलता के फलस्वरूप मिथक सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना को नये परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करता है। यथार्थता को भी मिथकीय चेतना बदल देती है। मिथकीय परिकल्पना ऐतिहासिक बोध को तो विस्मृत कर देती है, लेकिन अपनी प्रकृति से सामाजिक चेतना को भी जगाती है। इतिहास में जब–जब विदेशी आक्रमणों और दासता ने हमारी चेतना का पराजय, अपमान और क्रूर प्रतिबन्धों को कुचलने की कोशिश की हैं, तब–तब इन मिथकों ने हमारे राष्ट्रीय चरित्र की सिर्फ अभिव्यक्ति ही नहीं दी, बल्कि उन चरित्रों की जयघोष की है। कवि दिनकर की कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं –

''रे रोक युधिष्ठिर को न यहां
जने दे उनको स्वर्ग धीर
पर फिरा हमें गांडीव, गदा
लौटा दे अर्जुन भीम वीर।
कह दे शंकर से आज करें
वे प्रलय नृत्य फिर एक बार
सारे भारत में गूंज उठे
हर–हर बम का फिर महोच्चार।''

श्री. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव के अनुसार – मिथक मानवीय स्वतंत्रता को ठोस शक्ल प्रदान करती है एक ऐसा रुप है जो किसी अन्य माध्यम के द्वारा नहीं किया जा सकता है।

जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव – नयी कविता उद्भव और विकास : मिथक मनुष्य की बजाय मानवता के सामुहिक अवकाश से है। मिथको के द्वारा ही हम प्रतीको के माध्यम से मानव जाति के पुरातन ऐतिहासिक एवं आधुनिक अनुगमन करते हैं प्रतीक मिथक नहीं हैं क्योंकि दोनों सांस्कृति उपादान है।[4]

आ) मनुष्य प्रतीक स्थिति की लीलाओं में अगुठित अर्थो को खोजा करते हैं: डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव ने मिथक को आदिम मनुष्यों के मानसिक भौतिक जीवन का प्रतीकात्मक कथा संग्रह कहा हैं। प्रतीक स्थिति की लीला में अवगुंठित अर्थो को खोजा करते हैं। मिथक वस्तुतः अन्य आत्मनिष्ठ और मनोवैज्ञानिक होता है :

''मिथक वस्तुतः आत्मनिष्ठ और मनोवैज्ञानिक होता है वह सांसारिक यर्थात का मानवीय अनुभूतियों की शब्दावली में प्रस्तुत करता है।[5]

फ्रायड ने मिथकों की सृष्टि के मूल में दमित यौनवृत्ति की एक विधि को स्वीकार किया है तो युंग ने 'सामुहिक अचेतन' का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। फ्रायड ने किसी वृद्ध कुलज्येष्ठ के प्रति पुत्रों के विद्रोह, कुलज्येष्ठ की हत्या और नारियों की मुक्ति जैसी घटनाओं की कल्पना करके मिथक का रहस्य सुलझाना चाहा है लेकिन सार्वभौम मिथकों की यह व्याख्या सर्वत्र ही ग्राह्य नहीं मानी जा सकती। ऐसे अनेक मिथक हैं जिनका संबंध यौनवृत्ति से नहीं जोड़ा जा सकता।

मिथक में कल्पना और यथार्थ का समन्वय होता है। कल्पना के माध्यम से कवि या कलाकार अपनी अनुभूतियों को कलात्मक रूप देते समय मात्र सर्जनात्मक कल्पना से ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता है। सक्रिय कल्पना की प्रक्रिया यथार्थ पर टिकी होती है। मिथक कल्पनाएं भी कला और कार्य में संस्कारित होकर ऐतिहासिक चेतना का आयात्तीकरण करती है। लेखक लालित्य–तत्व में मिथकीय चेतना का तथा मानव तत्व में धार्मिक चेतना का सामंजस्य करते है। अर्थात वे कल्पना में भी धार्मिकता का स्वरूप देखते हैं।[6]

निष्कर्ष के रुप में यही कहा जा सकता है कि मिथक बहुआयामी शब्द है जिसको किसी एक परिभाषा में नही बांधा जा सकता। कुछ विद्वान मिथक को धार्मिक कथा के रूप में स्वीकारते है, उसके आधार पर अनेक ग्रंथ लिखे है, वैदिक–पुराणिक मिथक काव्य, रामायण आश्रित मिथक महाभारत आश्रित मिथक काव्य आदि।

कुछ विद्वान मिथक और भाषा को पूरक मानते है कुछ भाषा की विकृति मानते हैं, कुछ के लिये भावना और आस्था का अभिन्न रूप है, धार्मिक कथा है साहित्य का माध्यम है, सामाजिक संगठन का माध्यम है, देवीय भावना से मानवीय भावों की अभिव्यक्ति है, आम प्रतीकों का गुंठन है, सांस्कृतिक चेतना ऐतिहासिक सत्य को प्रकट करने का माध्यम, मिथक कला ओर यर्थात का समन्वय हे, मिथक आविष्कार है, प्रवचन व भाषण है, आत्मनिष्ठ और मनोविज्ञान है, मानव की दमित इच्छा की अभिव्यक्ति व्यक्ति और समाज के बीच तारतम्य स्थापित करनेवाला जिस प्रकार सागर की व्याख्या नहीं की जा सकती। उसके गुण–धर्म और गहराई का सही–सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता, वही स्थिति मिथक की है। यह सत्य है, मिथक अभिव्यक्ति का माध्यम है, अभिव्यक्ति का आधार क्या है, यह तर्क का विषय न होकर चिन्तन का विषय हैं, मिथक की गहराईयों में झांके, जीवन का सत्य शायद वहीं मिलेगा।

संदर्भ सूची

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी – पुस्तक साहित्य सहचर लोकभारतीय प्रकाशन इलाहाबाद, ISBN No. 978.81.8031.775.0 पृष्ठ 104
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी – पुस्तक साहित्य सहचर लोकभारतीय प्रकाशन इलाहाबाद] ISBN No. 978.81.8031.775.0 पृष्ठ 105
3. रमेश कुंतल मेघ–मिथक से आधुनिकता तक, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली ISBN No. 978.81.8143.932.1ए पृष्ठ 10
4. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव – पुस्तक नयी कविता उद्भव और विकास
5. रमेश कुंतल मेघ–मिथक से आधुनिकता तक, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली ISBN No. 978.81.8143.932.1ए पृष्ठ 18
6. रमेश कुंतल मेघ–मिथक से आधुनिकता तक, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली ISBN No. 978.81.8143.932.1ए पृष्ठ 148